विश्व पर्यावरण दिवस

प्रकृति के उपहार को प्राय: अहमियत नहीं दी जाती है, जब तक कि वे दुलर्भप्राय स्थिति में नहीं पहुंच जाते हैं । यदि अब हम तत्परतापूर्वक इस ओर कार्य करने में विफल रहते हैं; तो हमें मजबूरन प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने पर विवश होना पड़ेगा । जलवायु परिवर्तन कृषि एवं पशुधन पर गहरा असर डालता है । इससे हरित क्षेत्र की हानि होने के कारण हमारे देश में उपलब्ध जल एवं चारा संसाधन गंभीर रूप से प्रभावित हो रहा है । हम सभी डेरी सहकारिताओं से अपील करते हैं कि ऐसी गतिविधियों का सहयोग करें जिनसे हरित क्षेत्र बढ़े और स्थाई तौर पर जल संसाधनों का संरक्षण हो – अंतत: वृक्ष नहीं, तो जीवन नहीं ।

नागरिक एवं डेरी किसान के रूप में हमारा यह कर्तव्य है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें । इसमें वृक्षारोपण को बढ़ावा देने तथा चारा संसाधनों का रख–रखाव करने का महत्वपूर्ण आर्थिक हित निहित है । हमें इस उम्मीद से पौधे लगाने चाहिए कि हमारी भावी पीढ़ी को हरियाली विरासत में मिले । हम सब एकजुट होकर कार्बन फुटप्रिंट में कमी भी ला सकते हैं और इसके परिणामस्वरूप हमारा निवास स्थान पर्यावरण के अधिक अनुकूल हो सकेगा ।

सतही जल एवं भूजल दोनों सामुदायिक जल आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं । हमें कुछ दशकों में ही पानी की कमी का भारी सामना करना पड़ सकता है, यदि हम इन संसाधनों की सुरक्षा नहीं करते हैं और जल संरक्षण को बढ़ावा नहीं देते हैं ।

भले ही, भारत में कुल जल संसाधन का केवल 31% ही भूजल से प्राप्त होता है, परंतु इससे 63% सिंचाई की आवश्यकता की पूर्ति होती है । देश का 30% भूजल स्तर गंभीर अति दोहन के स्तर पर पहुंच गया है । यदि यही स्थिति बरकरार रही, तो 2030 तक लगभग 60% भारतीय भूजल स्तर गंभीर स्थिति में पहुंच जाएगा । लगभग 25% कृषि उत्पाद संकट में पड़ जाएगे।

वृक्ष लगाएं, धरती को बचाएं

जल डेरी पशुओं के लिए सबसे आवश्यक आहारीय पोषक तत्व है और भूजल के दोहन से पशुधन के लिए जल की उपलब्धता विशेष रूप से प्रभावित होगी और इसका दूध उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ेगा । सतही जल के प्रभावी प्रबंधन द्वारा इसका समाधान किया जा सकता है जिसे केवल विज्ञान की मदद से संभव किया जा सकता है । यहां पर सुशासन, नीति, नेतृत्व एवं सामाजिक संयम से संबद्ध मानवीय समस्याएं भी मौजूद हैं ।

स्थानीय जल संसाधन का प्रबंधन सदैव सहकारी समुदाय आधारित गतिविधि रही है । आपसी भागीदारी, महिला सशक्तिकरण, पारम्परिक विकास ढांचे की सुसंबद्धता तथा आधुनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ संसाधनों के उचित उपयोग द्वारा ग्रामीण नेतृत्व स्थानीय जल संकट के समाधान में सामाजिक एकजुटता लाने में मददगार साबित हो सकता है ।

पूर्व में, समुदाय संचालित जल स्तर संरक्षण एवं रख–रखाव के मॉडल सबसे अधिक प्रभावी सिद्ध हुए हैं । हमें इन स्थायी जल संरक्षण के मॉडलों को पुनर्जीवित करने के लिए स्वयं प्रतिबद्ध होना होगा । हमारा आपसे एक बार पुन: अनुरोध है कि इस पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधे लगाएं। इससे हमें ग्रामीण समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा ।

एनडीडीबी के अध्यक्ष, कार्मिकों एवं आणंदालय के शिक्षक तथा छात्रों ने 5 जून, 2019 विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षरोपण किया ।